रीडिंग कॉर्नर का रोमांचक अनुभव

शाह आलम

पुस्तकालय हमारे स्कूल का अभिन्न हिस्सा है। इसके बिना स्कूल की संकल्पना करना मुश्किल है। पुस्तकालय बच्चों में स्वतंत्र पठन की आदतों को विकसित करने में मदद करता है। पुस्तकालय का ही एक छोटा प्रारूप कक्षाओं में 'पढ़ने का कोना' के रूप में हमारे स्कूलों में स्थापित किया जाता है। यह बच्चों के पढ़ने-लिखने, और उन्हें कुछ अन्य पहलू सिखाने में बेहद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रीडिंग कॉर्नर क्या है; कक्षा में इसका संचालन कैसे किया जा सकता है; बच्चे और शिक्षक इसका उपयोग कैसे कर सकते हैं; यह भाषा शिक्षण सीखने, और स्कूल में पढ़ने-लिखने के समृद्ध वातावरण को विकसित करने में कैसे मदद करता है; आदि बातों पर प्रकाश डालने का प्रयास इस लेख में किया गया है। -सं.

परिचय

अपने काम के दौरान मैंने कुछ स्कूलों में रीडिंग कॉर्नर के महत्त्व को समझने का प्रयास किया था। इस दौरान मुझे लगभग 50 से अधिक स्कूलों में जाने का मौक़ा मिला। मैंने पाया कि स्कूलों में पुस्तकालय तो है लेकिन इस्तेमाल में नहीं है, और कुछ स्कूलों ने पुस्तकालय के साथ-साथ रीडिंग कॉर्नर भी बनाए थे लेकिन उनका इस्तेमाल 5 स्कूलों को छोड़ सभी में नगण्य था। अपने इन अवलोकनों के आधार पर मैंने 6 स्कूलों के शिक्षक साथियों के साथ मिलकर रीडिंग कॉर्नर बनाने, और स्कूल में इनका प्रभाव समझने का प्रयास किया जो बेहद यादगार अनुभव रहा।

इस मुद्दे पर शिक्षक साथियों के साथ बातचीत में, मैंने पाया कि कुछ सवाल जो अकसर स्कूल के शिक्षक साथियों के द्वारा पूछे जाते हैं, वे हैं– क्या स्कूल की हर कक्षा के लिए रीडिंग कॉर्नर होना आवश्यक है? या, जब स्कूल में पुस्तकालय होता है, तब रीडिंग कॉर्नर की ज़रूरत ही क्या है? कई बार मुझे बहुत-से शिक्षक साथी रीडिंग कॉर्नर बनाने को लेकर दुविधा की स्थिति में भी दिखे। मसलन, रीडिंग कॉर्नर की क्या ज़रूरत है; उसे सँभालेंगे कैसे; बच्चे पुस्तकालय से ही किताब लेकर पढ़ लेंगे; आदि। अतः पुस्तकालय और रीडिंग कॉर्नर में कोई अन्तर है भी या नहीं, इसपर कुछ बातचीत ज़रूरी है।

रीडिंग कॉर्नर क्या है?

रीडिंग कॉर्नर या पढ़ने का कोना, कक्षा में बच्चों के लिए एक ऐसी आनन्ददायक जगह होती है जहाँ बच्चे स्वयं या समूह में बैठकर स्वतंत्र रूप से पढ़ते हैं। रीडिंग कॉर्नर का अर्थ कक्षा के किसी कोने में रस्सी पर कुछ किताबें टाँगना, या कक्षा में उपलब्ध मेज़ या अलमारी में भी किताबों को रखना है। ये किताबें उस समय बच्चों के स्तर व रुचि के अनुकूल होती हैं। पुस्तकालय वह जगह होती है जहाँ सभी कक्षाओं के लिए विभिन्न प्रकार की किताबें रखी होती हैं। यहाँ अलग-अलग कक्षा के बच्चे एक

साथ बैठकर पढ़ रहे होते हैं। पुस्तकालय बड़ा व विविध पाठकों के लिए होता है, इसलिए वहाँ बच्चों का अपने स्तर के अनुरूप सामग्री को ढूँढ़ पाना, और ये सुनिश्चित करना, कि वे अपनी रुचि व आवश्यकतानुसार कुछ पठन कर सकें, तुलनात्मक रूप से मुश्किल हो जाता है। ख़ासतौर पर छोटी कक्षा के बच्चों, अथवा जिन्हें पढ़ने में कम रुचि है उनके लिए। रीडिंग कॉर्नर पर व्यवस्थित और योजना के तहत काम करने पर शिक्षक को बच्चों के पठन कौशल को निखारने में मदद मिलती है। यहाँ उनके स्तर के अनुसार सामग्री उपलब्ध कराने में सहूलियत होती है। चूँकि रीडिंग कॉर्नर बच्चों की कक्षा में ही होता है, इसलिए उन्हें कभी भी पुस्तकें देखने, पढ़ने की छूट होती है, और यहाँ बच्चों की पहुँच ज़्यादा होती है।

रीडिंग कॉर्नर का महत्त्व या ज़रूरत

रीडिंग कॉर्नर कई प्रकार से मदद करता है। जैसे–

- यह विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने की आदत विकसित करने में सहायक है;
- यह विद्यार्थियों को रचनात्मकता के मौक़े देता है;
- बच्चों में बाल साहित्य के प्रति रुचि बढ़ाता है, जिससे वह आसानी से भाषा सीखते हैं;
- रोचकता से भरा रीडिंग कॉर्नर बच्चों की पढ़ने-लिखने में रुचि पैदा करता है, और बच्चों को आकर्षित कर सकता है; आदि।

कक्षा में रीडिंग कॉर्नर, वर्तमान में ज़्यादातर कक्षाओं में सामान्य तौर पर व्याप्त एकरसता और बोरियत को दूर करने का भी एक महत्त्वपूर्ण तरीक़ा है। चूँकि पढ़ना पढ़ने से ही आता है, और लिखना लिखने से ही, इसलिए रीडिंग कॉर्नर का हमारी कक्षाओं में होना ज़रूरी हो जाता है।

मेरे कुछ अनुभव

अपनी नई ज़िम्मेदारियों में मैंने सबसे पहले अकलतरा विकासखण्ड के कापन संकुल के प्राथमिक स्कूल महुआडीह में मैडम के साथ

मिलकर कक्षावार रीडिंग कॉर्नर बनाने की योजना बनाई। हर कक्षा में किताबों की संख्या कितनी होगी; बच्चों के स्तर के अनुरूप किताबों का चयन कैसे किया जाएगा; किताबों के चयन में बच्चों की भूमिका क्या होगी; आदि तय करने के लिए हमने निम्नलिखित प्रक्रियाओं को अपनाया :

- सबसे पहले हम एक मज़बूत रस्सी और काजू क्लिप बाज़ार से लाए, और उसे स्कूल की हर कक्षा में लगाया गया।
- स्कूल में आई हुईं 100 दिन 100 कहानियों वाली किताबें, और प्रथम फ़ाउण्डेशन व एनबीटी से कुछ किताबें लेकर पहले हर कक्षा के स्तर के अनुसार 20-20 किताबों का चयन किया गया।
- हमने तय किया कि इन किताबों को बच्चे ख़ुद ही रस्सी पर टाँगेंगे, और इनमें से अपनी-अपनी पसन्द की किताबों का चयन करेंगे।
- एक रंग-बिरंगे चार्ट पेपर पर 'पढ़ने का कोना' लिखकर लगाया।

- हमने एक रजिस्टर यह दर्ज करने के लिए रखा कि बच्चे किताब यहीं पढ़ेंगे या घर ले जाएँगे, ताकि यह देखा जा सके कि कोई बच्चा महीने में कितनी किताबें पढ़ रहा है। सत्र के अन्त में देखा जाएगा कि हर बच्चा कितनी किताबें पढ़ पाया।

इसके बाद हमने बच्चों की मदद से रीडिंग कॉर्नर को लेकर कुछ नियम बनाए। ये नियम इस प्रकार थे :

बच्चों की ज़िम्मेदारियाँ

- किताबों को नहीं फाड़ेंगे;
- जिन किताबों को बच्चे घर ले जाएँगे, सबसे पहले रजिस्टर में अपना और किताब का नाम दर्ज करेंगे, और किताब को सुरक्षित वापस करेंगे;
- किताबों को पढ़ने के बाद उसे ख़ुद ही रीडिंग कॉर्नर में लटकाएँगे; और
- बच्चे हर दिन 30 मिनट रीडिंग कॉर्नर से किसी भी एक किताब को पढ़ेंगे।

शिक्षकों की ज़िम्मेदारियाँ

- हर एक महीने में टाँगी हुई किताबों को हटाकर कुछ नई किताबों को टाँगना;
- किताबें कटने-फटने पर बच्चों के साथ मिलकर उनकी मरम्मत करना;
- जो बच्चे किताबें नहीं पढ़ पा रहे हों उनकी मदद करना;
- किताब पढ़ने के बाद कुछ बच्चे अकसर उसे उलटा-पुलटा लटका देते हैं। इन किताबों को सीधे और सही तरीक़े से लटकाना, और बच्चों को यह समझाना कि वे हर दिन किताब पढ़ने के बाद उसे सही तरीक़े से ही लटकाएँगे; और
- शिक्षक ख़ुद भी पढ़ेंगे, और कभी-कभी बच्चों के साथ बैठ कुछ पढ़कर सुनाएँगे भी, या उनसे उनका पढ़ा हुआ सुनेंगे।

इन्हीं प्रक्रियाओं और नियमों के साथ मेरे सहयोग से कुछ दूसरे माध्यमिक व प्राथमिक स्कूलों में शिक्षकों ने रीडिंग कॉर्नर बनाए।

इस प्रयास में कई तरह की चुनौतियाँ भी सामने आती रहीं। जैसे—

- बच्चे किताबों को फाड़ रहे थे;
- वे अपने द्वारा बनाए नियमों को भूल चुके थे;
- कई बच्चे किताबें घर ले जा रहे थे पर रजिस्टर में नाम दर्ज नहीं करा रहे थे; और
- बच्चे रोज़ किताबें पढ़ तो रहे थे, लेकिन उतनी रुचि के साथ नहीं।

इस प्रकार की चुनौतियाँ आना लाज़िमी भी था क्योंकि बच्चों को इस प्रकार से किताबें पढ़ने की आदत ही नहीं थी। ख़ासकर प्राथमिक स्कूल के बच्चों में पढ़ने की आदत न के बराबर होती है, और बड़ी कक्षाओं में भी यही स्थिति है, यहाँ भी पाठ्यपुस्तकों के अलावा बहुत कम बच्चे ही दूसरी किताबें पढ़ते थे। इन चुनौतियों के समाधान के लिए हम सभी शिक्षकों ने मिलकर चर्चा की। यह राय बनी कि शुरुआती दिनों में तय की गईं ज़िम्मेदारियों को अच्छे से लागू करने की कोशिश करें। इसके तहत बच्चों को किताब पढ़ने के लिए रोज़ 30 मिनट का एक कालखण्ड देना होगा जिसमें बच्चे सिर्फ़ किताब ही पढ़ेंगे। साथ ही शिक्षक उन बच्चों की मदद करेंगे जो पढ़ नहीं पा रहे होंगे। शिक्षक भी बच्चों के साथ बैठकर पढ़ेंगे, और उन्हें पढ़कर भी सुनाएँगे। शिक्षक बच्चों में किताब न फाड़ने की भावना का विकास करने का प्रयास करेंगे। इसके लिए कुछ शिक्षक साथियों ने अलग-अलग पर कारगर तरीक़े अपनाए। जैसे— जब भी कोई

बच्चा किताब फाड़ता, रश्मि मैडम एक उदाहरण देते हुए पूछतीं, "बच्चो! अगर कोई हमारी शर्ट को फाड़े तो कैसा लगेगा?" बच्चे बोले, "बुरा लगेगा।" "तो ज़रा सोचो, जब आप लोग किताब को फाड़ोगे तब किताब को कैसा लगेगा?" कुछ बच्चों ने कहा, "किताब को बुरा लगेगा।" वहीं कुछ बोले, "किताब रोने लगती होगी।" "फिर बताओ, क्या हमें किताब फाड़ना चाहिए?" सभी बच्चे एक स्वर में बोले, "नहीं।" इसका काफ़ी सकारात्मक असर दिखा और प्राथमिक शाला खपरीडीह में अब बच्चे एक भी किताब नहीं फाड़ते हैं। इसके अलावा यह भी है कि शिक्षक साथियों को भी कुछ कठोर क़दम उठाने चाहिए। मसलन, जो किताब को फाड़ेगा उसे ही उसकी मरम्मत करनी होगी, आदि।

पठन में रोचकता लाने के लिए भी शिक्षकों ने कुछ रचनात्मक क़दम उठाए। माने, जो पढ़ेगा उसको चॉकलेट मिलेगी। कुछ शिक्षकों ने बच्चों को स्माइली देने की प्रक्रिया अपनाई। धीरे-धीरे जब बच्चों में किताब पढ़ने की आदत बनने लगी, ये समस्याएँ थोड़ी कम हो गईं। जब शिक्षक साथी विकासखण्ड के व्हाट्सअप समूह में कक्षा के रीडिंग कॉर्नर के बारे में बातचीत साझा करने लगे, दूसरे शिक्षक साथी भी इससे प्रेरित हुए। उन्होंने अपने स्कूलों में भी रीडिंग कॉर्नर बनाने का प्रयास शुरू किया। जब मैं प्राथमिक शाला घनवा में मैडम के साथ मिलकर रीडिंग कॉर्नर बनाने के लिए गया, शिक्षक साथियों ने कहा, "सर, हम लोग कक्षा 3, 4 और 5 में रीडिंग कॉर्नर बनाएँगे।" मैंने पूछा, "पहली और दूसरी कक्षा में क्यों नहीं?" शिक्षक साथियों का मानना था कि पहली और दूसरी कक्षा में बच्चे सिर्फ़ किताब देखते हैं। वे पढ़ नहीं पाते हैं। लेकिन अब हम पहली और दूसरी कक्षा में बनाए गए रीडिंग कॉर्नर के महत्त्व और उसके इस्तेमाल को समझने लगे हैं।

कक्षा पहली और दूसरी में रीडिंग कॉर्नर

मैं यहाँ प्राथमिक शाला खपरीडीह की शिक्षिका और प्राथमिक शाला महुआडीह की शिक्षिका के कक्षा 1 और 2 में किए जा रहे

प्रयोगों का ज़िक्र ज़रूर करना चाहूँगा। इन दोनों शिक्षिकाओं के साथ भी ऊपर बताए गए नियमों के साथ रीडिंग कॉर्नर बनाए थे, और इन्हें भी वैसी ही समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ा था जिनका उल्लेख ऊपर किया है। और ये पहली और दूसरी कक्षा के बच्चे थे। आप समझ सकते हैं इन बच्चों को सँभालना कितना मुश्किल होता होगा! इन दोनों शिक्षिकाओं ने बच्चों को इंगेज करने में रीडिंग कॉर्नर का उम्दा इस्तेमाल किया। इसका नतीजा ये रहा कि जब मैडम कक्षा में नहीं होती हैं, बच्चे स्वत: से पुस्तकों को लेकर देखते रहते हैं। आपके मन में सवाल आ रहा होगा कि सिर्फ़ देखते ही तो होंगे, वे पढ़ कहाँ रहे हैं। बात बिलकुल सही है कि कक्षा 1 और 2 के बच्चों से यह अपेक्षा करना कि वो धाराप्रवाह पढ़ लेंगे, कपोल कल्पना होगी। फिर भी बच्चों का किताब के साथ जुड़ाव और किताब के चित्रों को देखकर उनपर बातचीत करना उनकी मौखिक भाषा के विकास में काफ़ी सहायक होता है। अब समझते हैं कि इन दोनों शिक्षिकाओं ने कैसी किताबों का चयन किया।

- कक्षा पहली के लिए सिर्फ़ चित्रात्मक किताबों को रखा गया।
- कक्षा 2 के लिए 5 किताबें सिर्फ़ चित्रात्मक और 5 ऐसी किताबें जो

चित्रात्मक हों और उनमें एक-एक लाइन के छोटे वाक्य लिखे हों।

इन्हीं दो प्रकार की किताबों का चयन कर शिक्षिका ने अपनी कक्षा में लगातार प्रयोग करना शुरू किया। शुरुआती दिनों में वे हर बच्चे के साथ बैठकर चित्र पठन करतीं, और बच्चों से बातचीत करतीं। जो बच्चे पहले बिलकुल भी नहीं बोलते थे, उन्होंने धीरे-धीरे बोलना और चित्रों को पहचानना शुरू किया। ये छोटी-सी सफलता दिखाती है कि कक्षा पहली और दूसरी में रीडिंग कॉर्नर का होना कितना ज़रूरी है। अगर शिक्षक साथी कक्षा पहली से बच्चों में किताबों के प्रति रुचि जागृत करेंगे, मेरा मानना है कि कक्षा 5 तक आते-आते बच्चों का पठन और लेखन दोनों बेहद शानदार हो सकते हैं। अब हम यह बात करेंगे कि इस रीडिंग कॉर्नर का इस्तेमाल रचनात्मक लेखन के रूप में कैसे कर सकते हैं।

लेखन के रूप में रीडिंग कॉर्नर का इस्तेमाल

हम सभी जानते हैं कि अगर बच्चों के हाथ में किताब होती है, वे न सिर्फ़ पढ़ते हैं बल्कि उसमें शामिल कहानियों-कविताओं की नक़ल भी लिखते रहते हैं। लेकिन इससे लिखने का अर्थ और फ़ायदा पूरी तरह सामने नहीं आता। इस प्रकार लिखने से उनकी लिखाई तो बेहतर होती है, लेकिन उनकी अभिव्यक्ति और रचनात्मकता छूट जाती है। इसलिए मैंने सोचा कि क्यों न बच्चों को रचनात्मकता की ओर भी ले जाया जाए। मैंने इसका प्रयोग प्राथमिक स्कूल घनावा में कक्षा 5 के उन बच्चों के साथ किया जिनका लेखन उतना अच्छा नहीं था। मैंने सोचा कि अगर ये बच्चे अपनी पढ़ी किसी एक किताब के बारे में 4-5 लाइन में अपने अनुभवों को लिख दें तो ये भी एक बड़ी सफलता होगी।

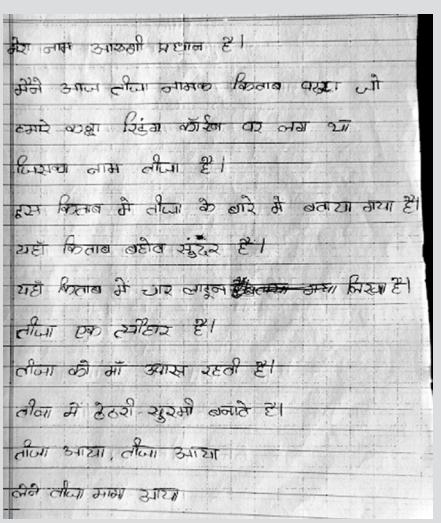

लंच के बाद का समय था। मैं जब स्कूल पहुँचा, बच्चे रीडिंग कॉर्नर से किताबें लेकर पढ़ रहे थे। मैंने पूछा, "आप कौन-कौन-सी किताब पढ़ रहे हैं?" किसी ने कहा कि वह *तीजा* नाम की किताब पढ़ रही है, वहीं कोई बोला कि वह *बस* नाम की किताब पढ़ रहा है। मैंने कहा, "आज आप लोग जो-जो किताब पढ़ रहे हैं उसके बारे में कुछ लिखना है।" सभी बच्चे मेरी ओर ऐसे देखने लगे मानो मैंने कुछ अजीब-सा असम्भव काम दे दिया हो। फिर मैंने एक उदाहरण देकर समझाया कि मान लो मेरा नाम रोहन है, और मैं आज *बस* नाम की किताब पढ़ रहा हूँ। इस किताब में किसके बारे में बात की गई है? तब उस बच्चे, जिसने *बस* नाम की किताब पढ़ी थी, ने कहा, "बस के बारे में।" फिर मैंने पूछा, "ये किताब पढ़कर आपको कैसा लगा?" वह बच्चा

मेरा नाम आरुही प्रधान है।
मैंने आज तीजा नामक किताब पढ़ा जो
हमारे कक्षा रिडिंग कॉर्नर पर लगा था
जिसका नाम तीजा है।
इस किताब मे तीजा के बारे मे बताया गया है।
यहाँ किताब बहोत सुंदर है।
यहाँ किताब मे चार लाइन अच्छा लिखा है।
तीजा एक त्यौहार है।
तीजा की माँ उपास रहती है।
तीजा मे ठेठरी खुरमी बनाते है।
तीजा आया, तीजा आया
लेने तीजा मामा आया

मेरा नाम काव्या गढ़ेवाल है।
मैं आज एक किताब पढ़ी पढ़ रही हूँ
जीसका नाम गिलहरी है
इस किताब बहुत सुंदर है।
इस किताब मे गिलहरी के बारे मे बताया
इस किताब मे चार लाइन है कि बहुत अच्छा
अच्छा लग रहा है
एक गिलहरी इधर फुदकती उधर फुदकती
यहाँ घुमती, वहाँ घुमती
पेड़ पर चढ़ती, डाल पर झूलती
छत पर जाती,
आँगन मे आती,
मूँगफली खाती, खुश हो जाती।

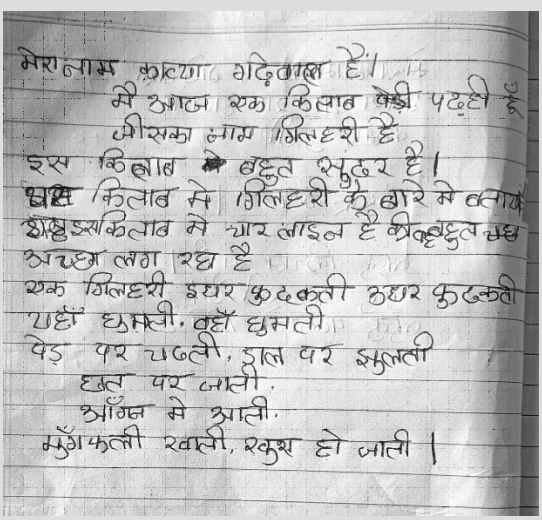

बोला, "बहुत मज़ा आया।" मैंने कहा, "आप सभी को इन्हीं सब बातों को लिखना है।" कुछ बच्चों ने बेहद शानदार प्रयास किए जिनमें से कुछ पेज 5 पर दिए गए हैं। इसके अलावा, पढ़ी जा रही किताब से सम्बन्धित थीम देकर भी हम रचनात्मक लेखन करवा सकते हैं। इस प्रकार का लेखन बच्चों के लिखना सीखने में सहायक होगा। इस प्रकार, रीडिंग कॉर्नर का इस्तेमाल कक्षा में प्रिंट रिच वातावरण के साथ स्कूल में समृद्ध वातावरण विकसित करने में भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

रीडिंग कॉर्नर का बच्चों और स्कूल पर प्रभाव

जिन स्कूलों में रीडिंग कॉर्नर बने उनमें कई फ़ायदे होते नज़र आए। हर स्कूल में कुछ-न-कुछ फ़ायदा दिखा, और कुछ बातें कमोबेश हर स्कूल में समान दिखीं। इनमें से मुख्य हैं :

- बच्चों में किताबों के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना विकसित हुई;
- बच्चों में पढ़ने-लिखने की आदत का विकास हुआ। जो बच्चे किताबों से दूर भागते थे उनमें किताबों के प्रति रुचि पैदा हुई;
- बच्चों में किताबों के प्रति स्वामित्व व अपनत्व की भावना का विकास हुआ। इसकी वजह से किताबों को बिना पूछे ले जाने की आदत दूर हुई, और किताबों को फाड़ना भी बन्द हुआ;
- बच्चों ने किताबों को अपने घर ले जाना भी शुरू किया। हमने पाया कि अभिभावकों ने भी पढ़ने में उनकी मदद की; आदि।

मुझे लगता है कि अगर सभी शिक्षक अपनी-अपनी कक्षाओं में रीडिंग कॉर्नर बनाएँ, और उनका इस्तेमाल करना शुरू करें, इससे बच्चों में किताबों के प्रति रुचि और रोचकता दोनों विकसित करने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही बच्चों के पढ़ने-लिखने के स्तर में भी वृद्धि होगी।

शाह आलम बिहार के गोपालगंज ज़िले के रहने वाले हैं। इनकी प्रारम्भिक पढ़ाई गाँव के स्कूल में हुई है। उन्होंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई इलाहाबाद विश्वविद्यालय से की है। फ़िलहाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में सन्दर्भ व्यक्ति के रूप छत्तीसगढ़ के जांजगीर ज़िले के अकलतरा ब्लॉक में कार्य कर रहे हैं।

सम्पर्क : shah.alam@azimpremjifoundation.org